हिंदी साहित्य में दलित चेतना

Metric 3
Hindi
Manish

- संपादक -

प्रा. डॉ. जिभाऊ शा. मोरे

अनुक्रम

१. डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे — १-३
- वामोदर मोरे के काव्य में दलित चेतना

२. प्रा. शिंदे नवनाथ सर्जेराव — ४-८
- ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत बश्श। बहुत हो चुका में दलित चेतना

३. नितीन रंगनाथ गायकवाड — ९-१२
- इंद्र बहादुर सिंह की कविताओं में दलित चेतना

४. प्रा. गणेश दयाराम शेकोकार — १३-१८
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ

५. मनिषा चिने — १९-२०
- अनामिक के दश द्वारे के पिंजरे में दलित चेतना

६. श्री. शरद कचेश्वर शिरोळे — २१-२४
- उदय प्रकाश के कहानी साहित्य में दलित चेतना

७. प्रा. नानासाहेब जावळे — २५-२९
- डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला के नाट्य साहित्य में दलित चेतना

८. प्रा. के. के. बच्छाव — ३०-३३
- हिंदी साहित्य में दलित चेतना प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में दलित चेतना

९. प्रा. डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे — ३४-३८
- हिंदी आत्मकथाओं में दलित चेतना

१०. राहुल जयसिंग बहोत — ३९-४१
- हिंदी कहानियों में दलित चेतना

११. डॉ. सुनिल द. चव्हाण — ४२-४४
- समकालीन हिंदी कहानी में दलित चेतना

१२. डॉ. सचिन कदम — ४५-४७
- हिंदी लोकगीतों में दलित चेतना

१३. प्रा. डॉ. योगेश दाणे — ४८-५१
- कवि केदारनाथ अग्रवाल के शुद्ध काव्यनाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना

१४. प्रा. अनिता कुंभार्डे (सोमवंशी) — ५२-५५
- हिंदी की आत्मकथा साहित्य में दलित चेतना

१५. प्रा. डॉ. अनुप सहदेव दळवी — ५६-५८
- मलेश्वर के उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित चेतना

१६. प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी — ५९-६५
- हिंदी दलित उपन्यासों में सामाजिक क्रांती

१७. तुपे सरला सुर्यभान — ६६-६८
- यथा प्रस्तावित उपन्यास में दलित चेतना

५. अनामिक के दस द्वारे के पिंजरे में दलित चेतना

शोध छात्रा - मनिषा चिने
हिंदी अनुसंदान केंद्र, विटको कॉलेज, नाशिक - रोड नाशिक (महाराष्ट्र)

दलित चेतना अर्थ एवं स्वरूप :- जन्मना जायते शुद्र संस्कार प्रस्त द्विज उच्चते। अर्थात जन्म से सबी शुद्र होते है, लेकिन कर्म, संस्कार, मनुष्य तथा समाज उन्हे उच्च बनाता है। दलित चेतना के संदर्भ में यही स्थिती है, दलित शब्द के देशात अर्थ के नुसार दलित वह है, जिसे पर अस्पृशता का नियम लागू है, जो परंम्परागत जीवन आवश्य सुख - सुविधा ओं से वंचित है। परंतु इस शब्द के अनेक अर्थ अनेक भाषाओं में प्रथों मे उपलब्ध होते है, जैसे-मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौदा हुआ या कुचला हुआ, पंडित विनिष्ट किया हुआ। जिस का दलन हुआ है। महात्मा गांधीजी ने दलित शब्द के पर्याय के रूप में हरिजन शब्द का प्रयोग किया था। तो महामानव बाबसाहब आंबेडकर जी बहिष्कृत और अछुत शब्द उपयोग लाये थे। परंतु इस संकल्पना में विश्व समाज का वह हिस्सा या व कर्म आता है, जो ग्राम तथा महानगरों में बसा हुआ है, वही जीवन आवश्य जरूरतों सें वंचित है, वहि दलित है। जो चाऐ किसी जाती उपजाती धर्म या सम्मज़ का हो, जिस का किसीना किसी प्रकार या पध्दती, तंत्र से शोषन, दलन हुआ है, या हो रहा है। वास्तविक इस स्थिती के लिए सम कालिन सामाजिक, राजनितीक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितीयाँ जिम्मेदार है। स्वाधिनतापूर्व एवं पश्चात दलित वर्ग का चित्र का साहित्य की विभिन्न विधाओं में अनेक घटनाओं के माध्यम से हुआ है।

चेतना : संस्कृत के चित् धातू से निर्मित है, सौ अहम्: अर्थात में हूँ का अर्थ यह शब्द देता है। चेतना, जागृकता, सजगता का अर्थ ध्वनित रती है। जो मनुष्य एवं समाज के होने का या जागृती का संकेत देती है, दर्शनशास्त्र एवं मनोविज्ञान में इसके विषय मे अनुकुल अनेकानेक अर्थ प्रस्तुत हुऐ है। प्रस्तुत शोधालेक में दलित चेतना वही है, जो दलित वर्ग की समस्याओं के प्रति चेतनता या जागृकता का इस वर्ग के अस्तित्व से संबधित है, अपने होते का बोध करती है।

अनामिका के दस द्वारे के पिंजरे में दलित चेतना : अनामिका का यह उपन्यास एक प्रयोगशिल उपन्यास है, जिसमें समाज के वर्ग की त्रासही प्रस्तुत हुई है। सामाजिक रितीयों ऐतिहासिक घटनों के आधार पर तथा कुछ मात्रा में दलित पत्रों के सहयोग से उपन्यासों के अत्यंत प्रयोगशिल बनाया गया है। जन्म के अनुसार जो जीवन प्राप्त होता है, वही व्यवहार में जाती कहलाती है। जात में जाती, वर्ग, वर्ग के संबध में भ्रम की स्थिती है, वेद में सर्व प्रथम मकिगजा नाम की जाती का उल्लेख प्राप्त होता है। जिस के चार विभाग थे - साद्य, महारात्रिक, आमास्वार और तुषित। सृष्टि विभाग के अनुसार इन के आधारभूत ब्रम्हवीर्य, कात्रवीर्य, विडवीर्य और

ISBN No. 978-93-83171-22-4

गुद्रवीर्य है। देवताओं ने यही जाती क्रम माना गया है। स्वभावमुलक है।[1] भारत में दलित एवं स्त्रीयों की स्थिती लगभग एक समान ही दिखाई देती है। दोनो ही आर्थिक समस्याओं से त्रस्त है और सामाजिक परंम्पराओं से बाधित है। समाज के सामने बोलना तथा अपनी रोजी रोटी चलाना गलत माना जाता था। वैसेही हालात दलित ज्ञानवान होकर भी कुछ मुनाफा नही होता यह स्थिती उपन्यास के निम्नवर्ग के पात्र सदाव्रत की दिखाई देती है। सदाव्रत रूचाऐ बेहत्तार पढता है, तो क्या, वह ब्राम्हण कुमार नही है, इस लिए सिर्फ श्रीधर वहाँ काया था और तबसे लगातार सदाव्रत यहीं सोच रहा था की, यदी अनामकुलगोत्र होने के कारण उस का और स्त्री होने के कारण प्रवेश यज्ञ मे डल में वर्जित नही माना जाता तो घर में तीन दिखाई आती और कुछ रोज ठीक से खा-पिकर सब तनमना जाते।[2] कोशिश करना हार नही है, पर प्रकट होने का मौका न मिलना अन्याय नही है, और अत्याचार भी पंडिता रमाबाई इनका नाम आदर्श से लिया जाता है, पर सच तो यह है, कि स्त्री होने के कारण वह भी दलितों की पक्ति में बैठती है, यह अनामिकाजी के विचारों को उपन्यास के प्रसंग में स्पष्ट होता है कि शुद्र और स्त्रिया दोनों तो एक स्थिती में है, इसलिए ब्रम्हाण कि सवारी शायद रमा को भी नही मिलेगी हम दोनो स्टेशन पर छुट जाते तो, इसलिए तो में चाहता हु, समृध्दि, शुद्र और स्त्रीयों के लिए समृध्दि अर्जित करना भी मुश्किल ही है, फिर भी पुरूषार्थ दिखाऊ तो वह सधनी जादा आसान होगी।[3] रमाबाई तो महान तपस्विनी और साधक थी त्याग तथा परिश्रम की प्रतिमूर्ती थी। उनके मन में उमंग जीवन की आशा, नये सपने, मानवीय मुल्य विद्यमान थे, फिर भी सामाजिक परंम्परा तथा प्रथाओं के कारण पिडा, दुःख, वेदाना का उन्हें शिकार होना पडा, इन उलझनों से निकलने के लिए उभरणे के लिए अनेक प्रयास उन्होंने किऐ। अनामिका इस संदर्भ में घटना के माध्यम से कहती है की, कुछ वर्ष पहले अमरिका में दासता का अंत घोषित हुआ था, और अब समय आ गया शुद्रातिशुद्र और स्त्री दासता से उबरें और इस दासता से उबरने का एक ही उपाय थां, शिका।

निष्कर्ष : उपरोक्त विश्लेषन से विवेचित है कि, अनामिका ने स्त्रीयों की सामाजिक, आर्थिक, स्थिती चित्रन के द्वारा दलित चेतना को वानी प्रदान की है, परंम्परागत दृढ अंधश्रध्दा, प्रथा, परंम्पराओं के कारन उन्हें अन्याय, दबाव लांच्छनो को सहना पडता है। स्वाधिनता के बाद परिस्थिती में परिवर्तन के बाद भी कुछ हद तक भी भारतीय निम्न वर्ग में परिवर्तन आया है, बदलाव है। दलित शब्द के अर्थ में मनुष्य की जाती दिल से जाती नही, उपन्यास में स्त्री पात्र लोधाबाई, रमाबाई इसी प्रकार की दलित स्त्रीयाऐ है।

संदर्भ : १. दलित विमर्श, डॉ. नरसिंहदास वनकर, पृष्ठ - ३६
२. दस द्वारे का पिंज़रा - अनामिका, पृष्ठ - १५
३. वही, पृष्ठ -२७

ISBN No. *978-93-83171-22-4*